।। प्रतिकार ।।

याद है वो बीते लम्हे मुझे
भूख से उठती वो चीखे भी
जिसको रौद देती थी
वो सामन्ती व्यवस्था
डर जाती थी
पूरी मजदूरों की बस्ती
खौफ में जीता था हर वंचित
दरिद्रता बैठ जाती चौखट पर
काफी अन्तराल के बाद सूर्योदय हुआ
दीन बहिष्कृत भी,
सपनों का बीज बोने लगा
वक्त ने तमाचा जड दिया
हैवानियत के गालों पर
दीन का मौन टूट गया है
दीनता का हिसाब मांगने लगा है,
आजाद हवा के साथ कल संवारने की सोच रहा है
आज भी गिध्द आंखे ताक रही है
तभी तो दीन दीनता से,
उबर नही पा रहा है
बुराईयों का जाल टूट नही रहा है ।
आओ करें प्रतिकार
बेबस भूखी आंखों में झांक कर,
कर दे सम्बृधि का बीजारोपण .....

नन्दलाल भारती